IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

' रानी नागफनी की कहानी ' में राजनीतिक व्यंग्य

डॉ. भरत अ. पटेल
विजयनगर आर्ट्स कोलेज
ता. विजयनगर , जि. साबरकांठा
गुजरात ।

श्री हरिशंकर परसाई स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं । जीवन के व्यापक परिवेश को समझने-परखने की पैनी दृष्टि , व्यापक जीवनानुभव और तीव्र बुद्धि के कारण उन्होंने अपने देश की हर विसंगत और विद्रूप स्थिति को पकड़ कर कटु व्यंग्य किए हैं । सबसे ज्यादा उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में फैली विद्रूपताओं को अपने व्यंग्य का माध्यम बनाया है । स्वतंत्रता के पश्चात देश में कुर्सी संस्कृति का प्रभाव काफी बढ़ गया है । आज देश में स्वार्थी , पदलोलुप एवं अवसरवादी नेताओं का बोलबाला है । देश का नेतृत्व ऐसे राजनेताओं के हाथों में है , जिनका एकमात्र ध्येय है - जैसे भी हो सत्ता प्राप्त करो । ' रानी नागफनी की कहानी ' में परसाई जी ने राजा राखडसिंह के मुख्य आमात्य गोबरधन की सत्ता-लालसा पर कटु व्यंग्य किया है । वह कुंवर अस्तभान से अपनी कुर्सी टिकाए रखने का सौदा करता है। वह अस्तभान से कहता है - ' कुमार आपने मेरा राजनैतिक जीवन कम से कम २५ वर्ष बढा दिया । मैं जीवन के अंतिम क्षण तक अपने पद पर रह सकूँगा और पद पर ही मरूँगा । मेरी बड़ी लालसा है कि मेरी अंत्येष्टि राजकीय सम्मान के साथ हो । ' [१]

मुफतलाल इसका प्रतिभाव बड़ी मार्मिकता और व्यंग्यात्मकता के साथ देता है - ' ऐसी इच्छा स्वाभाविक ही है । सत्ता का मोह किसे नहीं होता । इन्द्र सत्ता के लिए कितनी अप्सराओं से कितने तपस्वियों की साधना भंग करवा चुका है । पद की कुर्सियों में गीली गोंद लगी रहती है । जो बैठता है चिपक जाता है । जब मामूली कुर्सियों में इतनी गोंद होती है , तब आपकी तो मुख्य अमात्य की कुर्सी है । वह तो पूरी गोंद की ही बनी होगी । ' [२] यहाँ पर व्यंग्यकार ने नेताओं की पदलिप्सा पर करारा व्यंग्य किया है ।

सत्ता का मोह छूटे नहीं छूटता । वृद्ध नेता जो स्वयं चल-फिर नहीं सकते , बोलते समय मुंह से लार झरती रहती है , फिर भी अपना पद छोड़ना नहीं चाहते – ' गोबरधन वृद्धावस्था और रोग के कारण उठ-बैठ नहीं सकते थे । वे बहरे और गूँगे हो गए थे , पर अभी भी मुख्य आमात्य बने हुए थे । वह एम्बुलेंस में विधानमंडल जाते थे और इशारे से जवाब देते थे ।' [३] इस व्यंग्य उपन्यास में गोबरधन के माध्यम से व्यंग्यकार ने ऐसे कुर्सी-चिपक नेताओं की बखिया उधेड़ दी हैं ।

मनुष्य स्वभाव से ही दिखावाप्रिय है । वह अपने आप को वास्तव में जैसा है उससे अलग दिखाने की कोशिश में लगा रहता है । नेता लोग ऊंचा पद प्राप्त करने के लिए आए दिन अखबारों की सुर्खियों में बने रहना चाहते हैं । राजा राखड़ सिंह के राज्य में भैया सा'ब नामक एक नेता है , जो मुख्य आमात्य बनना चाहता है । इसलिए वह अपना महत्व प्रतिपादित करने की हास्यास्पद चेष्टाएं करता रहता है । भैया सा'ब के सचिव और पत्रकार का संवाद दृष्टव्य है – ' लेकिन आप जरा सोचिए तो ।भैया सा'ब को सबेरे दो छींके आयीं , यह समाचार कैसे छपेगा ? आखिर समाचार में कुछ महत्व तो ... सचिन ने उसे वहीं डांटा - क्या कहते हो ? महत्व नहीं है ? बड़े आदमी की छींक का कोई महत्व नहीं ? जरा अक्ल से काम लो । पत्रकार में कल्पना शक्ति बहुत जरूरी है । दो छींकों का समाचार देकर आगे लिख सकते हो - पाठकों को स्मरण होगा कि जब बुद्ध ने गृह त्याग किया था तब उन्हें भी इसी तरह दो छींके के आयी थीं । समझे ? ... देखो इस बात को मत भुला करो कि तुम्हारे अखबार के आधे विज्ञापन भैया सा'ब के दिलाए हुए हैं और यह भी याद रखना तुम्हारे लिए फायदेमंद है कि मैनेजर से कह देने पर तुम्हारी नौकरी इसी क्षण समाप्त हो सकती है । ' [४]

अस्तभान और मुफतलाल को भैया सा'ब अपना जीव कहाँ रखते हैं , इसकी खोजबीन करनी है । जब वे यह जीव आमात्य को देंगे , तभी आमात्य कम रकम का टेन्डर भयभीतसिंह को भिजवाएगा । अस्तभान को नागफनी से विवाह करने के लिए यह अत्यावशक है । अस्तभान और मुफतलाल का यह संवाद नेता-चरित्र को उद्घाटित करता है -

' अस्तभान बोला - बड़ा विचित्र आदमी है यह भैया सा'ब भी ! अपने जिव को कहीं अलग रखता है ।

मुफतलाल ने कहा – इन राजनैतिक पुरुषों की बनावट ही अलग होती है । इन लोगों में कुछ तो अपनी आत्मा को शरीर में या शरीर के बाहर कहीं भी रख सकते हैं । कुछ नेताओं का ह्रदय पेट में होता है , किसी-किसी का टांग में । एक नेता को मैं जानता हूँ जो अपना हृदय नाबदान में रखता है । एक और नेता है जिसकी आत्मा तलुए में रहती है । जब चलता है , आत्मा को कुचलता जाता है । पर भैया सा'ब के जीव का किसी को पता नहीं है । [५] हमने ऐसी कथाएँ सुनी है जिसमें राक्षस लोग निर्भीक रूप से अनैतिक कार्य , हिंसा , पापाचार आदि करने के लिए अपनी आत्मा को कहीं और छुपा कर रखते थे क्योंकि आत्मा खराब कार्य करने में बाधा डालती है ।

इसको आधार बनाकर लेखक ने नेताओं की संवेदनहीनता और पापाचार की धज्जियाँ उड़ाई है ।

नेता लोग अपनी प्रसिद्धि के लिए जन-समारोहों में जाना चाहते हैं । जितने ज्यादा समारोहों में जाएंगे उतना ही उनका कद बढ़ेगा और ऊँचा पद मिलेगा । इसके लिए कुछ नेता तो अपने पैसों से समारोह का आयोजन करवा कर प्रसिद्धि पाना चाहते हैं । आलोच्य उपन्यास के भैया सा'ब भी ऐसे ही नेता है । अस्तभान और मुफतलाल भैया सा'ब का जीव ढूंढने के सिलसिले में उनसे मुलाकात करना चाहते हैं । मुलाकात पाने के लिए सचिव से झूठ बोलते हैं कि ' हम अपने नगर में एक बड़ा सम्मेलन कर रहे हैं । हम भैया सा'ब से प्रार्थना करने आए हैं कि इसका उद्घाटन वे करें । सचिव मुफतलाल के कंधे पर बड़ी आत्मीयता से हाथ रखकर कहता है – ' समारोह के प्रबंध में कोई कठिनाई तो नहीं है ? हो तो बताइए । हम कोई बाहर के नहीं हैं । कोई सामान तो नहीं चाहिए ? हमारे पास झंडियाँ हमेशा तैयार रहती हैं ; दरियाँ भी बहुत हैं ।लाऊडस्पीकर लगी जीप आपने बाहर देखि ही होगी । मानपत्र हम स्वयं छपवाकर लेते आएँगे । ऊपरी खर्च के लिए दो-चार सौ रुपये चाहिए तो भैया सा'ब दे सकते हैं । भैया सा'ब अधिक-से-अधिक सुविधा देते हैं और चाहते हैं कि समारोह अच्छे से अच्छा हो । ' [६] यहाँ व्यंग्यकार ने नेताओं की समारोह-प्रियता और झूठी प्रसिद्धि की लालसा को अनावृत कर दिया है।

हमारे यहाँ पार्टी का हर कार्यकर्ता विधायक बनना चाहता है । सभी विधायक मंत्री बनना चाहते हैं और निरंतर इस लक्ष्य प्राप्ति में कार्यरत रहते हैं । जिन्हें मंत्री पद नहीं मिलता है वे असंतुष्ट हो जाते हैं । वह अपनी ही सरकार के खिलाफ भी हो सकते हैं । आलोच्य उपन्यास में अस्तभान और मुफतलाल भैया सा'ब से मुलाकात करते हैं , इस समय का यह संवाद बड़ा मार्मिक और रोचक है – ' भैया सा'ब , विधानमंडल में आपका 'रोल' बड़ा स्वतन्त्र रहता है । जिस दल की सरकार है , उसके आप सदस्य हैं । पर आप सरकार की भी निर्भय आलोचना करते हैं ।

भैया सा'ब ने कहा – भाई मैं तो विरोध में हूँ और तब तक विरोध करूँगा जब तक मैं मुख्य आमात्य नहीं हो जाता । मैं विधान-मंडल में डटकर विरोध करता हूँ , सरकार के सब कार्यों को गलत बतलाता हूँ , पर जब मतदान का मौका आता है , तब मैं वोट सरकार को ही देता हूँ । ' [७] यहाँ परसाई जी ने नेताओं की नीतिहीनता , पदलालसा और विधानमंडल की धांधली को बेनकाब कर दिया है ।

अपनी कुर्सी की रक्षा के लिए हमारे नेता किसी भी हद तक गिर सकते हैं । अपनी कुर्सी के लिए संभाव्य संकट को देखते हुए वह विरोधियों और जनता का ध्यान फेरने के लिए कैसे भी षड्यंत्र रच सकते हैं । देश में युद्ध की स्थिति पैदा करने में भी नहीं हिचकिचाते । आलोच्य उपन्यास में नागफनी ने अस्तभान को संदेश भेजा कि आज से चौथे दिन मेरा विवाह राजा निर्बलसिंह से इसे कर दिया जाएगा । अगर आपकी भुजाओं में बल है तो मुझे यहाँ से निकाल ले जाएं । इस संदेश के बारे में अस्तभान

और मुफतलाल के बीच विचार-विमर्श होता है । मुफतलाल अस्तभान की दुर्बल बाँहों को देखकर फौज भेजने की सलाह देता है । अस्तभान युद्ध की राजनीति स्पष्ट करते हुए कहता है – ' युद्ध कभी-कभी आवश्यक भी होता है और उससे बड़ी-बड़ी समस्याएँ हल हो जाती हैं । एकबार हमारे राज्य में भयंकर गरीबी फैली । लाखों आदमी भूखे और नंगे रहने लगे । वे उधम मचाते और राजमहल के सामने इकट्ठे होकर पिताजी से रोटी और कपडा माँगते । पिताजी को लगा कि वे सरकार को पलट देंगे । उन्होंने एक तरकीब निकाली । एक दिन बड़ी जोशीली अपील जरी की , जिसमें कहा कि रजा निर्बलसिंह ने हमारी तीन वर्ग फीट जमीं अपने राज्य में मिला ली है । इस भूमि के निवासी , जो हमारे भाई हैं और हमारा धर्म मानते हैं , हमसे अलग हो गए हैं ..... हम अपनी भूमि का एक इंच भी किसी को नहीं देंगे । वीरों उठो , मातृभूमि की के सम्मान के लिए खून बहा दो .... बस, लोग भूख-प्यास भूलकर लड़ने चल दिए । अन्न और कपडे की समस्या अपने आप हल हो गई । ' [८] यहाँ बड़ी-बड़ी विकट समस्याओं से ध्यान भटकाने के लिए शासक पड़ोसी देश के साथ युद्ध छेड़ देता है । जनता अपनी समस्याओं को भूलकर मातृभूमि की रक्षा के लिए मर-मिटने को तैयार हो जाती है । परसाई जी ने ऐसी हल्की और गंदी राजनीति
करने वालों की धज्जियाँ उड़ा दी हैं ।

इस उपन्यास में परसाई जी ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पर भी करारा व्यंग्य किया है । अमेरिका जैसे विकसित देश अपने देश की चीजों को निर्यात करना चाहते हैं । कोई विकासशील देश उनकी चीजों को लेने से इन्कार करता है तो उसे पर आक्रमण करके अपनी मांग मनवा लेते हैं । एक उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है – ' हमारे कुल में कभी भी किसी भी बात पर युद्ध छेड़ देने की परम्परा है । युद्ध बहुत उपयोगी चीज है ,अगर इसका चतुराई से उपयोग किया जाय .... तुम्हें मालुम है चार साल पहले हमारा युद्ध पड़ोस के राज्य से क्यों हुआ था ? बात यह हुई कि उस साल हमारे यहाँ जूता-व्यापारियों ने बहुत जूते बना डाले । इतनी जरुरत तो राज्य में थी नहीं । लाखों जोड़ी जूते पड़े सड़ने लगे । व्यापारियों का दिवाला निकलने की नौबत आ गयी । वे पिताजी के पास आये और प्रार्थना की कि हमारे जूतों की बिक्री का प्रबंध कीजिए । पिताजी ने पडोसी राज्य से कहा कि हमारे जूते खरीदो । उसने कहा हमें जरुरत नहीं है ; हम अपनी आवश्यकतानुसार जूते यहीं बना लेते हैं । यह सुनकर पिताजी ने युद्ध छेड़ दिया । घमासान युद्ध हुआ , हजारों आदमी मारे गए , सैंकड़ों गाँव तबाह हो गए ।आखिर उस राज्य ने संधि का प्रस्ताव किया । पिताजी ने सन्धि में शर्त राखी कि तुम्हारे राज्य में जूता बनाना बंद हो जाएगा और तुम्हारी प्रजा को हमारे व्यापारियों के बनाए जूते पहनने पड़ेंगे । अब हमारे राज्य के व्यापारी मनमाने दाम पर उस राज्य में जूते बेचते हैं और
मालामाल हो रहे हैं । [९] यहाँ विकसित देशों की युद्ध की हल्की और नीच राजनीति का पर्दाफाश हो गया है।

इसी संदर्भ में हथियारों की बिक्री बढ़ाने के लिए जगत जमादार अमेरिका जैसे देश कैसे पड़ोसी देशों में युद्ध करवाते हैं इसका खाका परसाई जी ने बखूबी खींचा है – ' मैं तुम्हें बताता हूँ कि दो राज्यों में युद्ध कैसे कराया जाता है और उससे कैसे फायदा उठाया जाता है । एक बार हमारे राज्य में हथियार बहुत बने । हमने राजा राखडसिंह को दस हजार तलवारें दे दीं । ज्यों ही निर्बलसिंह को मालूम हुआ , वह चिंता में पड गए .... हमने दस हजार तलवारें उसे भी दे दीं । यह देखकर राखडसिंह ने हमसे दस हजार भाले खरीद लिए । निर्बलसिंह को मालूम हुआ तो उसने भी दस हजार भाले खरीद लिए ... दोनों और से युद्ध की धमकी दी जाने लगी ... पर एक दिन सुना कि दोनों ने सन्धि कार ली ... अब हमारे हथियार कौन खरीदेगा ? चौथे दिन उन्हों ने हमारी सेना से १०० सैनिक निर्बलसिंह के सैनिकों के रूप में राखडसिंह के राज्य में भेज दिए । उन्होंने सीमा पर लड़ाई शुरू कर दी .... दोनों राज्यों में भयंकर युद्ध शरू हो गया और हमारे सब हथियार बिक गए । ' [१०] यहाँ विकसित देशों की स्वार्थपरता और हल्की मानसिकता को लेखक ने पूरी व्यंग्यात्मकता के साथ उजागर किया है ।

इस प्रकार आलोच्य उपन्यास में श्री हरिशंकर परसाई ने भ्रष्ट ,खोखली , हलकट और नीतिविहीन राजनीति पर विषैले व्यंग्य बाण छोड़े हैं । मंत्रियों और नेताओं के दंभ-पाखंड , झूठ , बेईमानी , अवसरवादिता, सत्ता-लोलुपता , दोगलापन आदि पर भरपूर कुठाराघात किए हैं ।

❖ संदर्भ-संकेत :

१. ' रानी नागफनी की कहानी ' , वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली , पृष्ठ-११८
२. वही , पृष्ठ-११८
३. वही , पृष्ठ-१२४
४. वही , पृष्ठ-९७-९८
५. वही , पृष्ठ-९६
६. वही , पृष्ठ-९९-१००
७. वही , पृष्ठ-१०३-१०४
८. वही , पृष्ठ-७५
९. वही , पृष्ठ-७४
१०. वही , पृष्ठ-७६